2022

ISSN 2231-1041

स्तोम

कलाभिव्यक्ति का माध्यम

यूजीसी-केयर सूचीबद्ध, पिअर रिव्यूड वार्षिक शोध पत्रिका

'शिवम्' सांस्कृतिक मंच, छपरा

ISSN 2231-1041

2022

संस्थापक
चन्द्र किशोर सिंह, अधिवक्ता

आदि मुद्रक
श्यामा सिंह

प्रबन्ध सम्पादक
डॉ० कुमार विमल मोहन सिंह
डॉ० कुमार निर्मल मोहन सिंह

प्रकाशक
'शिवम्' सांस्कृतिक मंच, छपरा

मुद्रक
कुमार प्रिन्टर्स,
लाह बाजार, छपरा-841301

पत्राचार का पता
प्रो० लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या'
फ्लैट नं०- 108
न्यू टीचर्स फ्लैट
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
दरभंगा (बिहार)
मोबाईल नं० : 9835296330
ई-मेल : editor.stomresearchjournal@gmail.com

सहयोग राशि- **425/-**

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी संगीतसेवी अवैतनिक हैं ।

लेखकों के विचार से सम्पादकीय सहमति आवश्यक नहीं है ।

स्तोम

कलाभिव्यक्ति का माध्यम

(यूजीसी-केयर सूचीबद्ध, पिअर रिव्यूड वार्षिक शोध पत्रिका)

प्रधान सम्पादक
प्रो० लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या'

सह सम्पादक
डॉ० कुमार विनय मोहन सिंह

'शिवम्' सांस्कृतिक मंच, छपरा

स्तोम

कलाभिव्यक्ति का माध्यम

(यूजीसी-केयर सूचीबद्ध, पिअर रिव्यूड वार्षिक शोध पत्रिका)

सलाहकार मण्डल :
प्रो० पंकजमाला शर्मा
प्रो० द्वारम वी.जे. लक्ष्मी
विदुषी काजल शर्मा
प्रो० दर्शन पुरोहित
प्रो० के० शशि कुमार

सम्पादक मण्डल :
प्रो० संगीता पण्डित
प्रो० बी० राधा
डॉ० विधि नागर
डॉ० अनीता शिवगुलाम
डॉ० हिमांशु द्विवेदी

सहयोगी मण्डल :
प्रो० अर्चना अम्भोरे
प्रो० निशा झा
डॉ० राजश्री रामकृष्ण
डॉ० बिन्दु के०
डॉ० आरती एन० राव
डॉ० अरविन्द कुमार
डॉ० ज्योति सिन्हा
डॉ० मधुरानी शुक्ला
डॉ० अवधेश प्रताप सिंह तोमर
डॉ० रवि जोशी
डॉ० शिखा समैया
डॉ० अमित कुमार पाण्डेय
डॉ० समीर कुमार पाठक

शिवम्-सरगम

आङ्गिकं भुवनं यस्य वाचिकं सर्ववाङ्मयम् ।
आहार्यं चन्द्रतारादि तं नुमः सात्विकं शिवम् ।।

नृत् कला की इस दुनिया में,
है अपना नया कदम ।
जहाँ सुर का संगम होता,
वो सरगम बना शिवम् ।।

लेकर हम चाँद सितारे
आपस में प्रीत सँवारे ।
प्रीत के इस मंदिर में,
नित शीष झुकाते हैं हम ।।

संगीत हो मन्त्र हमारा,
अभिनय हो शस्त्र हमारा ।
हम नेक, एक, जग जीते,
यही नाद सुनाते हैं हम ।।

हो विकसित जग में कलायें,
संस्कृति की अलख जगाएँ ।
यही भावना हमारी,
यही लक्ष्य बनाते हैं, हम ।

मूल रचना : रविभूषण 'हँसमुख'
परिकल्पना : विनय मोहन 'वीनू'
संगीत : लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या'

सम्पादकीय....

अनेकता में एकता का देश है हमारा भारतवर्ष । सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति का एक अत्यन्त सक्षम उपकरण है संगीत तो साहित्य, कला, संस्कृति, विज्ञान आदि सामाजिक समृद्धि के उपकरण हैं । मानव और संगीत में बहुत गहरा तादात्म्य है । हमारे राष्ट्र की भावनात्मक एकता के अनेक प्रसंग संगीत-जैसी कला में विद्यमान हैं । भावना के धरातल पर हम सभी एक हैं और यह भावनात्मक एकता कलाओं से ही सम्भव प्रतीत होती है, संगीत में तो यह कूट-कूट कर भरी है । मन से मन को जोड़ने की अद्‌भुत क्षमता है इसमें । यह कला पूरे राष्ट्र को समेट लेती है, अपने अनुरूप ढाल लेती है । गायन-वादन और नृत्य के संयोग का संगीत हमारी राष्ट्रीय एकता का सबल सम्बल है, प्रतीक है- इसके अनेक ऐतिहासिक साक्ष्य हैं । भारतीय संगीत की दो पद्धतियाँ हैं- हिन्दुस्तानी अर्थात् उत्तर भारतीय और कर्नाटकी अर्थात् दक्षिण भारतीय । कई परिस्थितिजन्य विभिन्नताओं के कारण पद्धतियाँ भिन्न हो गईं परन्तु भारतीय संगीत की आत्मा एक ही है । कर्नाटक संगीत भी हिन्दुस्तानी वा भारतीय ही है । केरल, कर्नाटक, आन्ध्र, मद्रास में प्रचलित पद्धति कर्नाटकी है और शेष हिन्दुस्तानी । इसका कारण सम्भवतया रचनाओं में हिन्दी अथवा हिन्दुस्तानी की बहुलता अर्थात् पदों अथवा बदिशों की रचनाएँ पूरे उत्तर भारत में- आसाम से गुजरात व कश्मीर से महाराष्ट्र तक हिन्दुस्तानी में ही मुख्यतया होती हैं । समूचे भारतीय संगीत को पूरे राष्ट्र ने संजोया है, सींचा है । यह कला अनेकता में एकता का बहुत प्रबल साक्ष्य है, उदाहरण है । हमारी समन्वित संस्कृति का अनूठा रूप है संगीत । गीत-वाद्य-नृत्य के माध्यम से इसने संगीत की विभिन्न शैलियों द्वारा एकरूपता को मुखर किया है । स्वर-लय-ताल धर्म और भाषा की सभी सीमाओं को तोड़कर हमें एकरूप समृद्धि देता है । ध्रुपद-धमार, ख्याल-ठुमरी, भजन-कीर्त्तन हों या लोकगीत, वाद्य-वादन या नृत्य- इनके वैविध्य में भी एकात्मकता है । अनेकानेक परिवर्त्तनों के बावजूद यह यथावत गतिमान है, यही तो इसकी विशिष्टता है । कालान्तर में अनेकानेक गायन-शैलियों का प्रादुर्भाव हुआ, विविध वाद्यों का सृजन हुआ, नृत्य की अनेकानेक शैलियों का विकास हुआ, कभी अध्यात्म तो कभी मनोरंजन का वाहक बनता हुआ संगीत वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी परिमार्जित है । इतने परिवर्त्तनों के साथ इसे सबने एक-साथ अपनाया है । इससे सभी आत्मविभोर हुए । संगीत आनन्द की अनुभूति और अभिव्यक्ति का शाश्वत सत्य है । संगीत मनुष्य के अन्तर्मन को प्रकाशित कर स्नेह, सदाशयता, सहिष्णुता और भाईचारे की भावना को संचारित करने में सफल भूमिका का निर्वहण करता है । अनगिनत सबूत हैं, भारत की अखण्डता को बल प्रदान करने में सहायक संगीत के- कहते हैं, बैजू बावरा का मुगल सम्राट वध करना चाहते थे परन्तु उनका संगीत सुनकर सम्राट ने अपना निर्णय बदल डाला । पं. पलुष्कर तथा पं. भातखण्डे ने पूरे देश का भ्रमण कर दीर्घ अभियान चलाया । विश्व शान्ति परिषद् के अधिवेशन में शान्ति-दूत बन कर पं. ओंकार नाथ ठाकुर ने इंगलैण्ड, जर्मनी, बुडापोस्ट आदि स्थानों पर तथा गाँधी जयन्ती के अवसर पर नेपाल सरकार के आमंत्रण पर पूरे देश भारत